

## इकाई 1 समाजशास्त्र की प्रकृति

### रूपरेखा

#### 1.0 उद्देश्य

##### 1.0 उद्देश्य

##### 1.1 प्रस्तावना

##### 1.2 समाजशास की प्रकृति

##### 1.3 समाजशास्त्र का अर्थ

##### 1.4 समाजशास्त्र का उदय

##### 1.5 समाजशास्त्र परिभाषा

##### 1.6 समाजशास्त्र का विषय क्षेत्र

##### 1.7 समाजशास्त्री विषय वस्तु

##### 1.8 समाजशास्त्र की प्रकृति एवं अन्य सामाजिक विज्ञानों के साथ संबंध

##### 1.9 समाजशास्त्रीय अध्ययन के मानवीय उन्मेष

#### 1.0 उद्देश्य

इस इकाई का उद्देश्य समाजशास्त्र के बारे में जानकारी देना है। इकाई के प्रारंभ में अर्थ और दूसरे सामाजिक विज्ञानों के साथ संबंध के बारे में जानकारी देना है

1. समाजशास्त्र की प्रकृति, अर्थ और परिभाषा को समझ
2. समाजशास्त्र के क्षेत्र एवं विषय वस्तु की जानकारी प्राप्त हो जाने से समाजशास्त्र के मूल अर्थ को समझने में मदद मिलेगी
3. समाजशास्त्र का विभिन्न सामाजिक विज्ञानों के साथ संबंध के साथ समाजशास्त्रीय अध्ययन में मानवीय उन्मेष को समझने में मदद मिलेगी

##### 1.1 प्रस्तावना

विश्व में मानव एक ऐसा प्राणी है जो अपने बारे में जागरूक रहता है। वह अपने समाज के बारे में अनेक प्रश्नों को जानना चाहता है ,वह यह जानना चाहता है कि समाज कैसे बना परिवार, जाति ,धर्म, अमीर,

गरीब, नातेदारी ,अपराधी ,खानदान, गांव, मोहल्ला आदि कैसे बने समाज में लोग अपराध क्यों करते हैं ,सहयोग क्यों करते हैं ,संगठन क्यों बनाते हैं ,समितियां क्यों होती है , सामाजिक व्यवस्था क्यों बनती है, क्यों तोड़ी जाती है, युद्ध क्यों होते हैं ,आंदोलन क्यों होते हैं, क्रांतियां कैसे होती है ,मानव संघर्ष क्यों करता है ,प्रतियोगिता क्यों होती है ,पारिवारिक विघटन क्यों होता है आदि प्रश्नों का उत्तर सभी चाहते हैं ।इन प्रश्नों का उत्तर अभी तक अनुमान, बुजुर्गों से या अनेक कहानी के उदाहरणों से समझा जाता था , लेकिन मानव समाज के से उनको उत्तर समझने के लिए व्यवस्थित ढंग से ,वैज्ञानिक तरीके से जानने का प्रयास किया गया

1.2 समाजशास्त्र की प्रकृति समाजशास्त्री की प्रकृति के बारे में मतैक्य नहीं है, क्या समाजशास्त्र विज्ञान है या नहीं है। इस संबंध में दो विचार है

1. विज्ञान के रूप में

विज्ञान के रूप में अनेक दृष्टिकोण है

1) प्रमाण पर निर्भर

समाजशास्त्र अपनी बात को जबरदस्ती मानने पर जोर नहीं देता बल्कि हर बात के साथ प्रमाण की बात करता है ।वह प्रमाण को जानने का प्रयास करता है

2. वैज्ञानिक पद्धति

समाजशास्त्र किसी तरह की कल्पना पर की बात को नहीं मानता बल्कि प्रत्येक बात को वैज्ञानिक पद्धति के आधार पर सोचने समझने का प्रयास करता है 3. वर्गीकरण, सारणीयन एवं विश्लेषण

तथ्यों को व्यवस्थित तरीके से एकत्र करके उसे वर्गीकृत एवं सारणी के जरिए विश्लेषित करने का प्रयास करता है

4. कार्यकारण संबंधों का आधार यह कार्यकारण के आधार पर संबंधों एवं परिणामों को पता लगाने का प्रयास करता है ताकि ये पता करें हर घटना का कोई न कोई कारण अवश्य दिखाई पड़ता है

5. सामान्य करण एवं सिद्धांत निर्माण

समाजशास्त्र में सामान्यीकरण एवं सिद्धांतों का निर्माण करने का कार्य किया जाता है

2 विज्ञान पर से आपत्ति

1.व्यवहार की जटिलता

समाजशास्त्र के अंतर्गत सामाजिक घटनाओं का अध्ययन किया जाता है जिसे देखा जा देखा जा जाता है कि घटनाएं इतनी जटिल होती हैं उन्हें वैज्ञानिक तरीके से जानना वास्तव में बहुत मुश्किल है

### 3. वस्तुनिष्ठता की कमी

समाज का अध्ययन प्राकृतिक विज्ञान की तरह से वस्तुनिष्ठ नहीं है यानी देखा जाए तो समाज के अध्ययन को हम पूरी तरह से प्राकृतिक विज्ञानों की तरह से अध्ययन नहीं कर सकते। सामाजिक घटनाएं एवं व्यवहारों का वस्तुनिष्ठता के आधार पर अध्ययन नहीं किया जा सकता 3.घटनाओं की परिवर्तनशीलता घटनाएं समय के साथसाथ बदलती रहती है आज किसी घटना का कोई कारण है कल कोई और कारण हो सकता है कभी हम उसका कारण अच्छा मानते हैं कभी उसका कारण खराब मानते हैं ऐसे में उनको वैज्ञानिक ढंग से समझना संभव नहीं

### 4. प्रयोग की कमी

सामाजिक घटनाओं को प्राकृतिक विज्ञान की तरह से प्रयोग की तरह से नहीं किया जा सकता । यह समझा नहीं जा सकता है ऐसे में उन्हें समझने में तमाम तरह की मुश्किलें आती हैं

### 5. अमूर्त प्रकृति

सामाजिक घटनाओं में अमूर्त प्रकृति होती है अतः उन्हें भौतिक विज्ञान की तरह से समझना आसान नहीं है उनका अवलोकन करना वैज्ञानिक तरीके से मुश्किल है

उपरोक्त दोनों तर्क अपनी बात करते हैं लेकिन समाजशास्त्र की प्रकृति के बारे में रॉबर्ट बीरस्टीड अनुसार ये बातें कही गई हैं

1. यह आदर्शत्मक विज्ञान नहीं है बल्कि एक वास्तविक विज्ञान है
2. यह प्राकृतिक विज्ञान नहीं बल्कि एक सामाजिक विज्ञान है
3. यह व्यावहारिक विज्ञान नहीं है बल्कि एक सामान्य विज्ञान है
4. यह मूर्त विज्ञान नहीं बल्कि अमूर्त विज्ञान है
5. यह अनुभवी अनुभवजन्य एवं तार्किक विज्ञान है
6. यह प्राकृतिक विज्ञान नहीं बल्कि सामाजिक विज्ञान है ।
7. यह सामान्य विज्ञान है न की विशेषीकृत विज्ञान।

### 1.3 समाजशास्त्र का अर्थ

समाजशास्त्र विषय अंग्रेजी के सोशियोलॉजी शब्द का हिंदी रूपांतरण है लेटिन भाषा के शब्द socius और और ग्रीक भाषा के शब्द logus से की है socius शब्द को socio और logus शब्द को logy में रूपान्तरित

करके sociology शब्द बनाया जिसका अर्थ समाज से संबंधित विज्ञान हालांकि पहले इसको सोशल फिजिक्स कहा था बाद में ये sociology हुआ

#### 1.4 समाजशास्त्र का उदय

समाजशास्त्र का उदय मात्र 180 साल पुराना है समाज को समझने की प्रक्रिया में फ्रांस की क्रांति और इंग्लैंड की औद्योगिक क्रांति को भी भूमिका रही है। फ्रांस की क्रांति जिसमें स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व पर आधारित थी। क्रांति के बाद अव्यवस्था पर सेंट साइमन और अगस्त को काफी प्रभावित किया अगस्त को उनको काफी प्रभावित किया अगस्त कोट द्वारा वैज्ञानिक दर्शन और समाज भौतिकी के रूप में 1838-39 में सोशलॉजी को जन्म दिया इन उन्नीसवीं सदी में मार्क्स हर्बर्ट स्पेंसर एवं मुख्य रूप से अगस्त को अंत में समाजशास्त्र के उदय में योगदान दिया अगस्त कोट ने वैज्ञानिक दर्शन का सिद्धांत दिया और कार्ल मार्क्स ने वैज्ञानिक समाजवाद और स्पेंसर ने उद्विकास की बात कही Comte के तीन स्तरीय सिद्धांत के द्वारा नैतिक और बौद्धिक उद्विकास पर जोर दिया गया उन्नीसवीं सदी के आखिरी दशक में टॉनीज ने समाज का समुदायों व समितियों में वर्गीकरण किया, सिमिल ने स्वरूपात्मक समाजशास्त्र, संघर्ष व सहयोग का अध्ययन किया, वेबलिन ने सुलभ वर्ग, पैरटों ने अभिजन के संचार और माइकल ने राजनीतिक दलों का समाजशास्त्री अध्ययन दिया। बीसवीं सदी तक यह कई देशों के विश्वविद्यालय में पढ़ाए जाने लगा। अमेरिका में भी ये बीसवीं सदी में शुरू हो चुका था। इसके मुख्य विचारक मार्क्स, हर्बर्ट स्पेंसर, दुर्खीम, वेबर रहे। भारत में 1920 के आसपास का समाजशास्त्र विषय आया। जिसमें जीएस घूरिए, विनय कुमार सरकार, राधा कमल मुखर्जी, हर दास मजुमदार, दुर्जटि प्रसाद मुखर्जी, अवध किशोर शरण, टीवी बाटुमोर, रामकृष्णा मुखर्जी योगेंद्र सिंह ब्रजराज चौहान, आभा अवस्थी की कृतियों का और उनके योगदान सराहनीय कहा जा सकता है

#### 1.5 समाजशास्त्र की परिभाषा

समस्या को समझने के लिए अनेक समाजशास्त्रियों ने समयसमय पर अनेक तरीके से इसे समझने का प्रयास किया जिसमें Ginsberg के अनुसार समाजशास्त्र मानवीय अंतर्क्रियाओं एवं अंतर संबंधों उनकी दशाओं एवं परिणामों का अध्ययन है।

जॉनसन के अनुसार समाजशास्त्र वह विज्ञान है जो सामाजिक समूह उनके आंतरिक रूपों अथवा संगठन की विधियों उन प्रक्रियाओं का जो संगठन के इन रूपों एवं समूहों के मध्य संबंधों को स्थिर या परिवर्तित करता है, वर्णन करता है

गिलिन व गिलिन के अनुसार विस्तृत अर्थ में समाजशास्त्र जीवित प्राणियों के सामुदायिक जीवन में उत्पन्न अंत्यक्रियाओं का अध्ययन है अगस्त कोट के अनुसार

समाजशास्त्र सामाजिक व्यवस्था और प्रगति का विज्ञान है

Maciver के अनुसार

सामाजिक संबंधों के विषय में है संबंधों के जाल को हम समाज कहते हैं समाजशास्त्र इनका अध्ययन करता है।

मैक्स weber के अनुसार समाजशास्त्र व विज्ञान है जो सामाजिक क्रियाओं का विश्लेषणात्मक बोध कराने का प्रयत्न करता है ।

इन सभी के दृष्टिकोणों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अब मानवीय संबंधों की बात करता है यह एक मनुष्य को नहीं बल्कि पूरे समाज की बात करता है यह समुदायों ,समूहों ,परिवार ,जाति आदि के बारे में अध्ययन करता है 1.6 समाजशास्त्र का विषय क्षेत्र

समाजशास्त्र का विषय क्षेत्र का अर्थ संभावित सीमाएं हैं जहाँ तक कि किसी विषय का अध्ययन किया जा सकता है इसके विषय क्षेत्र की को दो श्रेणियों में बांटा जा सकता है 1.स्वरूपात्मक संप्रदाय

इसे विश्लेषणात्मक संप्रदाय भी कहते हैं यह मानता है कि समाजशास्त्र एक विशेष सामाजिक विज्ञान है इसे विशिष्ट सामाजिक संबंधों के स्वरूपों का अध्ययन करना चाहिए स्वरूपात्मक संप्रदाय में सीमेल ,स्मॉल ,वीरकांत, वेबर प्रमुख समर्थक हैं

## 2.समन्वयात्मक संप्रदाय

इसके अनुसार समाजशास्त्र विशिष्ट विज्ञान न होकर सामान्य विज्ञान है समाज का प्रत्येक भाग आपस में जुड़ा हुआ है यदि एक भाग में बदलाव होता है तो दूसरे में उसका प्रभाव अवश्य पड़ेगा इसके अनुसार समाज के आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक आदि सभी का अध्ययन करना होता है इसके समर्थक durkheim, sorokin व हॉब हाउस है

1.7 समाजशास्त्र की विषय वस्तु विषय वस्तु के अंतर्गत वे निश्चित सीमाएं हैं जिसके अंतर्गत अध्ययन किया जाता है समाजशास्त्र एक ऐसा विषय है जिसमें अपनी अलग विषयवस्तु संपूर्ण सामाजिक जीवन है इसका अध्ययन करने में मनोवैज्ञानिक दृष्टों कोण न अपनाकर अपितु अंत्यक्रियाओं का अध्ययन सामाजिक रचना के रूप में करता है । समाजशास्त्री अध्ययन हेतु निर्धारित स्वीकृत घटनाओं इकाइयों व्यवहारों और प्रक्रियाओं से है ।विषयवस्तु सीमित करना आसान नहीं है। मानव से संबंधित सामूहिक क्रियाएं संबंधों को इसकी विषयवस्तु में सम्मिलित किया जा सकता है। समाजशास्त्र मनुष्य के सामाजिक जीवन से संबंधित सभी पक्षों का वर्तमान व भावी स्थिति को ध्यान में रखते हुए अध्ययन करता है।

1.8 समाजशास्त्र की प्रकृति एवं अन्य सामाजिक विज्ञान से संबंध

समाजशास्त्र की प्रकृति के बारे में हमने यह जाना कि कुछ समाजशास्त्री इसे विज्ञान मानते हैं और कुछ नहीं मानते इसकी प्रकृति के अनुसार दूसरे समाज विज्ञान के साथ संबंधों के बारे में कहा सकता है कि अन्य सामाजिक विज्ञान का अलग अलग दृष्टिकोण है लेकिन इनमें एक दूसरे पर निर्भरता भी है समाजशास्त्र और राजनीति शास्त्र में इतना घनिष्ठ संबंध है कि राजनीति शास्त्र को समाजशास्त्र की एक शाखा माना जाता रहा है। राजनीति शास्त्र में सत्ता एवं राजनीतिक संबंधों का अध्ययन किया जाता है, जबकि समाजशास्त्र में समाज अध्ययन किया जाता है। राजनीतिक शास्त्र में राज्य का ध्यान किया जाता है, देखा यह गया है कि राज्य समाज का ही अंग है इसका यदि समाजशास्त्र की बात करते हैं तो बिना राजनीतिक शास्त्र के समाजशास्त्र का अध्ययन पूर्ण नहीं हो सकता।

### समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र

इन दोनों में घनिष्ठ संबंध है। श्रम विभाजन का धन का अध्ययन अर्थशास्त्र में किया जाता है। एडम स्मिथ ने इसके महत्व पर बल दिया है वहीं दुर्खिम ने श्रम विभाजन का समाज पर पड़ने वाला प्रभाव देखा। आधुनिक समाजों में श्रम विभाजन के काल में मानव एक दूसरे पर निर्भर रहे हैं अर्थशास्त्र में उत्पादन वितरण व उपभोग का अध्ययन किया जाता है। सभी प्रक्रियाएं समाज में रहकर संपन्न होती ऐसे में ये कहा जाता है कि ये समाज पर प्रभाव डालती है। अतः हम कह सकते हैं कि बिना अर्थशास्त्र के समाजशास्त्र का अध्ययन अधूरा है। समाजशास्त्र एवं इतिहास

इतिहास व समाजशास्त्र दोनों एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। यदि हमको समाजशास्त्र में वर्तमान समाज का अध्ययन करता है तो इसके लिए इतिहास को जानना आवश्यक है। जिसमें समाज के बारे में जानकारी मिल सके इस प्रकार बिना इतिहास के समाज की जानकारी अधूरी है समाजशास्त्र में ऐतिहासिक पद्धति एवं तुलनात्मक पद्धति में उन आंकड़ों की आवश्यकता पड़ती है जिन्हें इतिहासकार ही प्रदान करता है ऐसे में बिना इतिहास के समाजशास्त्र अध्ययन को पूर्ण करना संभव नहीं है।

### 1.9 समाजशास्त्री अध्ययन के मानवीय उन्मेष

मानवीय उन्मेष अथवा दृष्टिकोण का अर्थ सामाजिक घटनाओं को मानवीय परिस्थितियों के संदर्भ में समझना है। सी राइट मिल्स ने कहा है कि समाजशास्त्री उन सामाजिक संवेदनाओं को भूलते जा रहे हैं जिनके बिना मानवीय व्यवहारों का विश्लेषण नहीं किया जा सकता सामाजिक क्रियाएं एवं सामाजिक संबंधों के प्रत्येक पक्ष सामाजिक मूल्यों और व्यक्तिगत संवेदनाओं से प्रभावित होता है मानव सामाजिक सांस्कृतिक जीव है। उसके पारस्परिक संबंध में व्यवहार कुछ ऐसे मूल्यों और संवेगों से प्रभावित होते हैं, जिन्हें वैज्ञानिक ढंग से समझना बहुत मुश्किल है।

मानव एक सामाजिक सांस्कृतिक जीव है उसके पारस्परिक संबंध में व्यवहार कुछ ऐसे मूल्यों और संवेगों से प्रभावित होते हैं जिन्हें वैज्ञानिक ढंग से समझना बहुत मुश्किल है। वर्तमान में यह माना जाने लगा है कि

समाजशास्त्री अध्ययन में वास्तविक जानकारी प्राप्त करने के लिए वैज्ञानिकता के साथ साथ मानवीय पक्ष को भी आधार मानना पड़ेगा। अगस्त कौत ने भी माना है कि समाजशास्त्रीय अध्ययन की प्रकृति वैज्ञानिक मानने के बाद भी समाजशास्त्रियों को सामाजिक व्यवस्था और प्रगति का विज्ञान कहा है। मैक्सवेल ने एक और सामाजिक क्रियाओं को समाजशास्त्र के अध्ययन की विषयवस्तु और दूसरी ओर मानवीय क्रियाओं के भाग को वैज्ञानिक आधार पर प्रस्तुत न करके मानवीय आधार पर स्पष्ट करने पर जोर दिया है। डिलथे ने बताया है कि अनुभवी अध्ययन तथा कुछ विशेष पद्धतियों के द्वारा एकत्रित किए गए आंकड़ों के द्वारा सामाजिक यथार्थता को स्पष्ट करना संभव नहीं है। दूसरे जड़ पदार्थों का पक्षपात रहित एवं भावना रहित होकर वस्तुनिष्ठ अध्ययन कर सकते हैं। गार्विकल, जोबर्ग, ग्लास, मर्टन एडमंड गोल्फमैन ने महत्व दिया है मानवीय उन्मेष से संबंधित अनेक उपागम है जिनमें लोकदधतिशास्त्र, प्रतीकात्मक अंतः क्रियावाद, अमूल परिवर्तनवाद आदि को हम समझ सकते हैं जो अनेक समाजशास्त्र ने वर्तमान समय में दिया है।

प्रश्न

1. समाजशास्त्र क्या है ?
2. समाजशास के क्षेत्र एवं विषय वस्तु में अंतर बताइए।
3. समाजशास्त्रे साथ अन्य सामाजिक विज्ञान के संबंध क्या है? 4. समाजशास्त्री का उदय भारत में कब हुआ।
5. समाजशास्त्र विज्ञान है या नहीं है।
6. समाजशास्त्र का संबंध अर्थशास्त्र के साथ कैसा है?
7. समाजशास्त्र का संबंध इतिहास के साथ कैसा है ?
8. समाजशास्त्र का संबंध मनोविज्ञान के साथ कैसा है ?
9. समाजशास्त्र और राजनीति शास्त्र के साथ कैसा संबंध है ? कुछ उपयोगी पुस्तकें

- 1 विद्याभूषण, सचदेवा, समाजशास्त्र के सिद्धांत किताब महल 1993
- 2 एलेक्स इंकल्स, व्हॉट इज़ सोसियोलॉजी, प्रिंट इज़ हाल, नई दिल्ली 1965
- 3 मिल्स राइट, सोशियोलॉजी इमेजिनेशन, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयॉर्क 1967
- 4 जानसन एचएम, सोशियोलॉजी सिस्टेमेटिक इंट्रोडक्शन, रटल एंड केगल पाउल, लंदन 1960
- 5 मैकायवर, पेज, समाज